हनुमान चालीसा

|| दोहा ||

श्रीगुरु चरन सरोज रज,
निज मनु मुकुरु सुधारि |
बरनउँ रघुबर बिमल जसु,
जो दायकु फल चारि ||

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार |
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार ||

|| चौपाई ||

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर |

राम दूत अतुलित बल धामा,
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ||

महाबीर बिक्रम बजरंगी,
कुमति निवार सुमति के संगी ||

कंचन बरन बिराज सुबेसा,
कानन कुण्डल कुँचित केसा ||

हाथ ब्रज अरु ध्वजा बिराजै,
काँधे मूँज जनेऊ साजै |

शंकर स्वयं/सुवन केसरी नंदन,
तेज प्रताप महा जगवंदन ||

बिद्यावान गुनी अति चातुर,
राम काज करिबे को आतुर |

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया,
राम लखन सीता मन बसिया ||

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा,
बिकट रूप धरि लंक जरावा |

भीम रूप धरि असुर संहारे,
रामचन्द्र के काज सँवारे ||

लाय सजीवन लखन जियाए,
श्री रघुबीर हरषि उर लाये |

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई,
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ||

सहस बदन तुम्हारो जस गावैं,
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै |

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा,
नारद सारद सहित अहीसा ||

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते,
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते |

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा,
राम मिलाय राज पद दीन्हा ||

तुम्हारो मंत्र विभीषण माना,
लकेश्वर भए सब जग जाना |

जुग सहस्त्र जोजन पर भानु,
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ||

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं,
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं |

दुर्गम काज जगत के जेते,
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ||

राम दुआरे तुम रखवारे,
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

सब सुख लहै तुम्हारी सरना,
तुम रक्षक काहू को डरना ||

आपन तेज सम्हारो आपै,
तीनों लोक हाँक तै कांपै |

भूत पिशाच निकट नहिं आवै,
महावीर जब नाम सुनावै ||

99pandit.com

नासै रोग हरै सब पीरा,
जपत निरंतर हनुमत बीरा |

संकट तै हनुमान छुड़ावै,
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ||

सब पर राम तपस्वी राजा,
तिनके काज सकल तुम साजा |

और मनोरथ जो कोई लावै,
सोई अमित जीवन फल पावै ||

चारों जुग परताप तुम्हारा,
है परसिद्ध जगत उजियारा |

साधु सन्त के तुम रखवारे,
असुर निकंदन राम दुलारे ||

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता,
अस बर दीन जानकी माता |

राम रसायन तुम्हरे पासा,
सदा रहो रघुपति के दासा ||

तुम्हरे भजन राम को पावै,
जनम जनम के दुख बिसरावै |

अंतकाल रघुवरपुर जाई,
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ||

और देवता चित्त न धरई,
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई |

संकट कटै मिटै सब पीरा,
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ||

जै जै जै हनुमान गोसाईं,
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं |

जो सत बार पाठ कर कोई,
छूटहि बंदि महा सुख होई ||

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा,

99pandit.com

होय सिद्धि साखी गौरीसा ।

तुलसीदास सदा हरि चेरा,
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ॥

99pandit.com